धवला भाग ४

शुद्धिपत्र

(संशोधक--पं. जवाहरलाल शास्त्री, भीण्डर, राजस्थान)

शंका--

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
१४	५	डेवढा	डेढा

विषयपरिचय

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
१७	१	एक राजूके प्रत्तर या वर्ग प्रमाण है	एक राजू चौडा, सातराजू. लंबा (आयात) एक लाख योजन ऊंचा (१४२८५ $\frac{५}{७}$) यो बाहल्य जगत्प्रतर प्रमाण घनफलवाला है
१७	२	व्यासवाला	योजन व्यासवाला तथा एक लाख योजन ऊंचा
१८	३१	गमनागमन कर रहे है।	×(एकेंद्रियोंमें विहारवत् स्वस्थान नहीं होता)

मूलपुस्तक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
१०	२८	गुणिते	गुणिते कृते
११	२७	एकेकस्मिन्	एकैकस्मिन्
,,	,,	गुणिता	गुणिता जाता
१३	२५	प्रमाणको	विस्तारको
१५	१८	अर्धमात्र	अर्द्ध-अर्द्ध मात्र
३४	२६	उत्सेधके	आयामके
४०	२८	$\left(\frac{१६८}{१०} \div \frac{१}{२}\right)^{२}$	$\left(\frac{१६८}{१०} \times \frac{१}{२}\right)^{२}$
४१	१०	$\frac{१६८^{२}}{२०}$	$\left(\frac{१६८}{२०}{}^{१}{}_{४}\right)$
,,	२०	पूर्वोक्त गुणकारोंसे	पूर्वोक्त गुणकार गुणित अवगाहना गुणित राशिसे
,,	२२	इन गुणकारोंसे	इन राशियोंसे
४३	२३	चाहिये	चाहिए
४६	१८	की उत्कृष्ट अवगाहना	का उत्कृष्ट क्षेत्रफल
,,	१९	,,	,,
,,	२३	$\frac{५००}{९}\times१६+१६$	$\left[\frac{५००}{९}\times १६\right]+१६$

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
४६	२४	$\frac{८८८१२०००}{३६६१२}$ धनुष	$\frac{८८८२२०००}{३६६१२}$ वर्गधनुष
,,	२५	$\frac{८८८१२०००}{३६६१२} \times \frac{९६}{१}$	$\frac{८८८२२०००}{३६६१२} \times \left[\frac{९६}{१}\right]^२$
,,	,,	$\frac{८५२५९५२०००}{३६६१२}$ प्रतरांगुळ	$\frac{८१८५८३५५२०००}{३६६१२}$ प्रतरांगुळ
४९	१२	$\frac{१०८+५००}{९६} =$	$\frac{१०८\times५००}{९६} =$
५२	१४	२००० हजार योजन	२००० योजन
,,	१९	उत्तर और दक्षिण	पूर्व और पश्चिम
५३	११	पूर्व और पश्चिम	दक्षिण और उत्तर
,,	१८	,,	,,
,,	१९	,,	,,
५४	८	उत्तर और दक्षिणमें पूर्वसे पश्मितक	पूर्व और पश्चिम पार्श्वयुगलोंमें
५४	१३	$१३\times७ = ९१,\ ९१\times१४ = १२७४$	$१३\times७ = ९१,\ १६+१२ = २८,$ $२८\div२ = १४\ ९१\times१४ = १२७४$
,,	१७	पूर्व और पश्चिम	दक्षिण और उत्तर
,,	२४	,, में	,, की अपेक्षा
,	२५	,	,,
५५	९	,,	,,
,,	१८	$\div \frac{७}{१}$	$\div \frac{४९}{१}$
,,	२३	$\frac{३१९८००००}{३४४} + \frac{१७८३६}{३४४}$	$\frac{३१९८००००}{३४३} + \frac{१७८३६}{३४३}$
५८	१६	$७\times४+३\times२४+६ = ७५७$	$(७\times४\times२४)+(३\times२४)+६ = ७५०$
,,	१७	$७५०-७२ = \frac{६७८}{१२}$	$७५०-७२ = ६७८,\ ६७८\div१२ = \frac{६७८}{१२}$
६१	,,	$१३\frac{४}{७}$	$१३\frac{५}{७}$

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
६२	११	छठवी	छठी
६४	१६	प्रतिसमयमें मरनेवाली राशिको	प्रथम पृथ्वीके द्रव्यको
,,	१७	,,	,,
,,	२५	गतिमे	गतिमें
,,	३०	विस्तारसे करना	विस्तारसे गुणित करना
७०	१४	संग्रहीत	संगृहीत
,,	२९	तिर्यंच पर्याप्त	तिर्यंच
७२	१३	,,	,,
,,	१४	पर्याप्त जीव	जीव
,,	२३	हुई,	है,
७७	२४	असख्यातगुणे	असंख्यातगुणे
७८	२१	इससे	यहांसे
८०	२०	क्षेत्रके	क्षेत्रको
८५	२२	उसका जो	उसका जो लब्ध आवे उसके
,,	२३	,,	,,
,,	,,	भाग लब्ध आवे उतनी	भाग प्रमाणराशि
८६	१३	असंख्यात भागको	असंख्यात बहुभागको
९४	५	संखेज्जदिभागेण होज्ज ?	संखेज्जदि भागे ण होज्ज ?
,,	१९	भाग प्रमाण होना चाहिए ?	भाग क्षेत्रमें नहीं होना चाहिए ?
१०४	२५	त्रस पर्याय	त्रस पर्याप्त
१३७	१६	संज्ञीजीव	आहारक जीव
१४२	१	अजिवो	×
,,	२६	इस भव्य शरीरवालेको	इस भविष्य कालमें स्पर्शनविषयक शास्त्रके ज्ञायकके
१५३	२२	(१) $\frac{२२८}{२२८} = १$	(१) $\frac{२८८}{२८८} = १$

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
१५३	२२	$(२)\frac{५७६}{२२८}=२$	$(२)\frac{५७६}{२८८}=२$
१६२	१२	असंख्यातवाँ	संख्यातवाँ
,,	२९	वे उस गुणस्थानमें	वे उन एकेन्द्रियोंमें
१६३	९	उस गुणस्थानमें	एकेन्द्रियोंमें
,,	९	सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान सहित
१६४	२६	सासादन गुणस्थानवर्ती	सासादम गुणस्थानवर्ती जीवोंका
१६८	२२	$\left(\frac{३}{८}\times\frac{१}{२}^{२}\right)=\frac{२७}{२५६}$	$\left(\frac{३}{८}\times\frac{१}{२}\right)^{२}=\frac{२७}{२५६}$ वर्गराजू या प्रतर राजू
,,	२३	व $\frac{७^{१}}{४६४\frac{२७}{१६}}$	व $\frac{७^{२}}{४६४\frac{२७}{१६}}$
१७६	१९	वे आकाशके	वे देशोन आकाशके
१९१	२५	संख्यातवा	संख्यातवाँ
१९४	४	॥ ४ ॥	॥ ५ ॥
१९५	१३	२०१६, ८१७८	२०१६, ८१२८
१९८	१०	संव्या	संख्या
,,	,,	देव	देय
,,	१५	$१६^{\text{अ}}-१=\frac{\text{र}\ ७^{२}\ (\text{जगत्प्रतर})}{१००००० ^{२}\times ३१३६}$	$१६^{(\text{अ}-१)}=\frac{\text{र}\ ७^{२}\ (\text{जगत्प्रतर})}{१००००० ^{२}\times ३१३६}$
,,	१६	$४^{\text{अ}}-१$	$४^{(\text{अ}-१)}$
,,	१९	प्राप्त शलाका मानमेंसे	×××
,,	२०	,,	,,

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
१९८	२२	लेकर सोलह	लेकर क्षेत्रफलोंका अनुपात सोलह
,,	२८	प्रतिषु 'सुवर्ण'	प्रतिषु 'सुण्णं'
२००	२४	$२ = \left[\frac{१(१६ न-१)}{(१६-१)}\right]-\left[\frac{१(४न-१)}{(४-१)}\right]$	$२ = \left[\frac{१(१६^{न}-१)}{१६-१}\right]-\left(\frac{१(४^{न}-१)}{४-१}\right)$
२०५	१९	भार्गोसे	मार्गोंसे
२०८	१३	राजु प्रततररुप	राजु प्रतररूप
२११	२७	योनिमती	योनिनी
,,	३१	तिर्यंच	तिर्यंच
२१२	१५	हो जा है	हो जाता है
२१६	३०	कस्यासंख्येयभाग:	लोकस्यासंख्येयभाग:
२१८	२६	स्थिर	स्थित
२१९	२०	पूर्वोक्त	पूर्वोक्त
,,	२४	समचतुरस्त्र	समचतुरस्र
,,	३२	वह क्षेत्रके	वह क्षेत्र
२२१	२४	लोकबाहल्य	योजनबाहल्य
,,	३३	अ–क प्रत्यो	आ–क प्रत्यो:
२२२	१६	$\frac{३५७१}{२९०५६}$	$\frac{३५७९}{२८९२८}$ राजुप्रतर
,,	१९	विश्कम्भ	विष्कम्भ
२२४	१७	नही।	नहीं है।
२२५	२८	देवोंने	देवोंके
२२६	४	तदाफोसणं	तदा फोसणं'
,,	३२	×××	१ प्रतिषु मारणं इतिपाठ:।
२२९	३१	ऊपके	ऊपरके
२३१	१५	संख्यात घनांगुळ प्रमाण	××

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
२३१	१६	अंगुल	घनांगुल
„	१७	घनांगुल	अंगुल
„	२५	भवनवासी	व्यंतर
२३३	१४	नौयोजन	नौ सो योजन
४५	२२	साधर्म	साधर्म्य
२४८	१८	$\left(३\frac{३}{७}\right)$	$\left(३\frac{४}{७}\right)$
„	१९	$\left[४\frac{६}{७}\right]$	$\left[४\frac{३}{७}\right]$
„	२५	पृथिवों	पृथिवी
२५१	२६	विशेप	विशेष
२६५	२४	मनुष्योंका	मनुष्योंमें
२६७	१३	सम्यदृष्टि	सम्यग्दृष्टि
२६८	१६	भी ओघपना	भी इनके ओघपना
„	२५	चाहिये ।	चाहिए, क्योंकि
२६९	२	भागो	भागे
„	१३	वै. मिश्रकाययोगी जीवोंका	वै. मिश्रकाययोगी असंयत सम्यग्दृष्टि जीवोंका
२७१	१	एथ	एत्थ
२७२	१८	राजुप्रतको	राजुप्रतरको
२७३	१५	दर्शना	दर्शाना
२८६	२७	लब्धिके	एक लब्धिके
२९२	२३	हुई भी	हुए भी
„	२९	उपापद	उपपाद
२९६	२०	डेढ राजू पर समाप्त	डेढ राजू पर तेजो लेश्यावालोंका उपपाद क्षेत्र समाप्त

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
३०५	१८	पदोंके	शेष पदोंके
३०७	२२	उपपापद	उपपादपद
३०९	३	आहारएसु	अणाहारएसु
,,	१४	सम्भवित	सम्भावित
,,	२४	देशोना: । सयोगकेवलिनां	देशोना: । असंयत सम्यग्दृष्टिभि: लोकस्यासंख्येयभाग: षट्चतुर्दश-भागा वा देशोना । सयोगकेवलिनां
३१५	२१	परिणमित	(अन्यरूप) परिणमित
३२१	२१	प्रवुत्त	प्रवृत्त
३२४	२९	सादि सपर्यवासनश्चेति ।	सादिसपर्यवसानश्चेति ।
३३२	३०	निर्जीणा:	निर्जीर्णा:
३३९	१८	कि क्षयहोनेवाली सभी राशियोंके	क्योंकि सभी राशियां
३४५	१४	प्रतिभाग काल महित	प्रतिभग्न होनेके काल सहित
३४६	१६	सर्वाद्धा	सव्वद्धा
३५४	१९	एक समयकी	उत्कृष्ट कालकी (अन्तर्मुहूर्तकी)
३६५	२१	पुन:	अथवा
३८३	१८	उद्वर्तना घातसे	अपवर्तनासे घातसे
३८९	१०	असंखेज्जासंखेज्जाणि	असंखेज्जासंखेज्जाओ
,,	२७	प्रतर, पल्य	प्रतरपल्य
४१७	३	पोग्गल परियट्टेसुप्पण्णेसु	पोग्गलपरियट्टेसु पुण्णेसु (एकेन्द्रियेषु आवल्पसंख्येयभाग प्रमित-पुद्गल परिवर्तन प्रमाणानन्तकालात्मक: परिभ्रमणकाल: । (पेज ३८८ सूत्र १०९) (धवलाटीका)
४१७	१५	शेष रहनेपर	पूर्ण होनेपर
४२०	१६	अपने योगके	अपने गुणस्थानके
४२२	१८	मूहूर्तके	मुहूर्तके
,,	२२	उदयमें आये	उपार्जित किये

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
४३४	२९	प्रदेशपर	स्थानपर
४३७	१३	और	या
४४५	६	णिरयगदीएण	णिरयगदीए ण
,,	८९	तिरिक्खगईएण	तिरिक्खगईए ण
,,	१०	देवगदीएण	देवगदीए ण
४४५	२०-२१	उत्पन्न कराना	उत्पन्न नहीं कराना
	२२	,,	,,
४४५	२४	,,	,,
,,	२६	,,	,,
४५६	६	०मंतोमच्छिय	०मंतो मुहुत्त मच्छिय
४६१	१३	प्रस्तार के	प्रस्तार में
,,	२४	तीन अन्तर्मुहूर्तोंसे	तीन अन्तर्मुहूर्तोंमेंसे
४६३	२२	उद्वर्तनाघात	अपवर्तनाघात
४६४	२४	कम अढाईसागरोपम कालसे अधिक काल	अधिक ढाई सागरोपम काल
,,	२५	अढाई सागरोपम कालके	विवक्षित पर्यायके
४६८	१३	वर्धमान	शंका—— वर्धमान
,,	१८	शंका—— तेजओर	तेजओर
४७५	३०	गुणस्थानोंका	गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्याका
४७७	१८	सादि सान्त नहीं है।	सादि नहीं है।
,,	२९	अर्थात् फिर तो भव्यत्वको अनादि अनन्त भी होना पडेगा	अनादि अनन्त भव्यत्वभी होना चाहिए.
,,	३०	,,	,,
४८८	३	उक्कस्सेण वे समया	उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण बे समया
४८८	२८	सामान्योक्तः	सामान्योक्तः कालः